दैनिक नवज्योति nagaur - 29 Dec 2024 - Page 14

मेड़ता। राष्ट्रीय परिसंवाद कार्यक्रम में बोलते प्रो. चारण एवं उपस्थित श्रोतागण। -नवज्योति

मीरां ने अपने कर्म से प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की

मीरां विषयक पर हुआ राष्ट्रीय परिसंवाद

न्यूज सर्विस/नवज्योति, मेड़तासिटी

श्रीमद् भगवत गीता में अभिव्यक्त को ज्ञान एवं कर्मयोग से कहा जाता है, क्योंकि इसमें आत्मा की प्रतिष्ठा प्रेम के रूप में होती है। मीरां ने अपने कर्म से सकल विश्व में प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की। यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादमी एवं श्री चतुर्भुज शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को श्री चारभुजा राजपूत छात्रावास में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद के उद्घाटन समारोह में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि एक तरफ जहां मीरांबाई ने मारवाड़ एवं मेवाड़ के यश को सूर्य की भांति प्रकाशमान किया है, वहीं उन्होंने समाज की कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के विरुद्ध लोक में जन चेतना जगाकर देश को एक नई दशा और दिशा प्रदान की। ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर डॉ. सत्यनारायण ने कहा कि मीरांबाई ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। आज जब दुनिया स्त्री विमर्श की बात कर रही है ऐसे में यह प्रश्न विचारणीय है कि आज से पांच सौ वर्ष पहले मीरांबाई नारी शक्ति के रूप में एक अनुपम उदाहरण है, गिरधर कृष्ण को अपना आराध्य मानकर अपना जीवन व्यतीत करने वाली मीरां विश्व की एक सर्वश्रेष्ठ कवयित्री है, जिनका राजस्थानी भाषा मेड़तिया भक्ति काव्य विश्व में अद्वितीय है। उद्घाटन सत्र का संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. रामरतन लटियाल ने किया। उसके बाद साहित्यिक सत्र राष्ट्रीय परिसंवाद के साहित्यिक सत्र प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित एवं डॉ. जगदीश गिरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए जिसमें डॉ. रामरतन लटियाल ने मध्यकालीन काव्य परम्परा एवं मीरांबाई तथा डॉ. रीना मेड़तिया ने राजस्थानी लोक मानस में मीरांबाई विषयक आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किए। इसी कड़ी में डॉ. सवाईसिंह महिया ने मीरांबाई की भक्ति साधना एवं साहित्यकार श्यामसुन्दर किशनावत ने इतिहास के उज्ज्वल उजास में मीरांबाई विषयक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक शोध पत्र प्रस्तुत किए। डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने कहा कि मीरांबाई का जीवन एक अबूझ पहेली है, जिसे आज तक कोई भी सुलझा नहीं पाया मगर मीरांबाई के जीवन एवं सृजन पर नई दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। डॉ. जगदीश गिरी ने कहा कि मध्यकालीन समय में देश में अनेक महिला संत या कवयित्रियां हुई है मगर किसी भी कवयित्री पर मीरां जैसा न तो सामाजिक दबाव था और न ही साहस। मीरां का साहस अद्भुत था। कार्यक्रम के प्रारंभ में भक्त शिरोमणि मीरांबाई के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया। वहीं दो मिनट का मौन रखकर देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह की दिव्य आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी गोविंदराम बेड़ा, एसीबीईओ श्रीराम खोजा, सहायक अभियंता देवेन्द्रसिंह राठौड़, मीरां जयंती महोत्सव समिति पूर्व अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश बिड़ला, भवानी सिंह मेड़तिया, घनश्याम पारीक, लालूसिंह खाटोलाई, इन्द्रसिंह राठौड़, महेन्द्रसिंह भैसड़ा, राजूराम फलौदिया, सत्यनारायण सुथार बड़गांव, डॉ. कालू खां देशवाली, मीरां चौधरी, हरभजन लोढ़ी, करमाराम लांबा, गिरीराज किशनावत, निसार मोहम्मद सलावत, रामचंद्र लाडा, नवीन लाड़ा, चेतन कमेड़िया, विक्रमसिंह चौधरी, नैतेंद्रसिंह लवसरा, लोक-गायक कैलाश के.डी. सिंह सोढ़ाया, सुरेन्द्र सिंह निम्बीजोधा, मनोज वर्मा, छोटाराम चोयल सहित अनेक विद्वान रचनाकार, गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

परिसंवाद में मीरांबाई की भक्ति साधना को किया रेखांकित

अंतिम सत्र समापन समारोह में भी अध्यक्षता करते हुए ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर अर्जुनदेव चारण ने कहा कि राजस्थान की लोक साहित्य संदेश श्रेष्ठ और विशाल है। इस लोक में मीरांबाई को जो प्रेम एवं आत्म-सम्मान दिया वो समाज में अद्भुत है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा के उदाहरण पेश कर मीरांबाई की भक्ति साधना को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने कहा कि मीरां एक पतिव्रता नारी थी, उन्होंने ऐसे कोई भी पद नहीं लिखे जो जिससे मारवाड़ या मेवाड़ की प्रतिष्ठा को आंच आए। असल में मीरां के नाम से अनेक अन्य लोगों ने पद लिखकर मेवाड़ राजवंश के खिलाफ गलत धारणाएं फैला दी जो किसी भी दृष्टि से प्रामाणिक नहीं है। श्री चतुर्भुज शिक्षा समिति उपाध्यक्ष सत्यपालसिंह भाटी ने स्वागत भाषण दिया। शिक्षाविद् भवानीसिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया।